दुर्गाबलिविधि

(०३९)

फो- २१

ॐ श्रीं गेषाधिं दहि सिद्धिं दही स्नानं दहि आयुर्द्दहि धनं दहि धर्मं दहि
लक्ष्मीं दहि ॐ मीं वलि गरुड रत्न अन्नं णावधासाहा ॥ ॥ त्रैवोद्धि द्यामहावि
द्या त्रिभूलोक षुट्टल ता ॥ यत्यानिष्ठ स्त्यावि द्यात मूक्षा नाप्रसीजय ॥
स्नर्धनालेग ञ्जा ज्व पुष्प काव क्षा नाक्रस ॥ दिद्या सर्वे नलमाप्रत्रावि
पक्षि दं श्रदिह ॥ अनंफलि प्रमुपाल्ह विष्ठ तूपाल्व पर्घण ॥ स्नर्म
नालयद्दवीः तस्यत स्यानवान्वम ॥ स्ताद्वागो पालि नाम. विद्यात्र
कापनाजया ॥ क्रीरिंनात्मननाद्दवी. सनत्रनातर्धदूलयनी ॥ नवपाथ

कणनितं: सोरा८दीप त्रिसंस ॥ महापद्मसु तबसूनपानीवालिपू
र्विकं ॥ कनातुलाधमायनुगलस्वमृपवरुंनं ॥ लूगिजखदिगमा
नधनदहछनीजिवंवलि मभ्र२ साल ॥ नवदुनामनूपंसूनद्विपू
नगनाजालपिरठे जर्यखंबकौ८नमधपी८०त्रिपथगीतिइनदाविं
संगअछुमाला ॥ आगयीसिद्विसंथपनिकूमजनुब्याछिहिंयोगद
दं:हक्कोर्ह पंवखावृजेअलकसहलाददविनमामि ॥ वाकसह ॥
कू ॥ संजोकौकौंहूंरू०टयकनाजमरलणा०वंगालाकृगपाल

पा ॥ जाळिन्या नानन जेव पूजिता नकुसूजिण ॥ पाथजा क्रतुजा
र्ळेव स्वैद्रार्त जास्व ग ईजा ॥ यागजा मकु आज्जेव हूल जाव्द्यिहि
षन ॥ नानारूपधनाधान्य: यांग्रि न्पा वेलयैनला ॥ नेनाद सनिवा
लि वालिन्यां. रलिन्पवक्रसमागना ॥ समयक्ळनयया न्या. नथाय
वलिकाक्लिन्य ॥ दप्यानीमात दैदयांग व पूष्यादि स्त्लुरि ॥ दक
ददकुमकाम ॥ वाढिनार्थददकु मदैइ स्०ट उस्लाहा ॥ वक्ना ॥
लि ॥ यद्दीवन्ठामल नाला. दूर्म्दरवी हूहू रविवला ॥ जपावविजया

देव. अजितनाथ पन्नाजिता. महा रूपवि नूपा जीःव्ख नाम समा स्का
॥ हैहात्रिया नगनीय. दष्ट्रा नीव्यकनर्वे॥ पिष्यनी काप्रूपहा मी
तासिनि हहात्रिका॥ सुद्ध काली॰उ रजा वसभ्र रिमा सूह्रद्रिका॥
दाग्नि ७मकुमा हूहा. करि हि कापाल धाति ली॥ ऋनन वालि दानन
संकु सपा मदा सवा॥ ऐ हात्रिल यागिनि सा वलींग कुर सा हा॥
त्रि॥ हींक्रिं सोव क्मु क्मा नुसव नुपिप नधिन सना ति ऋति नून
व लुनाकश्चा कषू नकु पलु पिलि गप र्ण पर्वमा हू नया गा॥ ऊ

नद्राकपालाहृदूकनगिनिनागद्भवानि शूलहस्ता देविवक्त्रे विकि
शूलपमिनिवदूकौंवमिनागदूनयंकी॥ उद्धृत्य काह्णुनायादिविगग
नगलनिष्कलौसूगलैंवा पागलैंवानलैंवानलैं वासलिलपवन
यार्थप्रहृत्रह्नि नागा॥ पाठश्रोपपाजदिषवप ऋहूनाहूर्धद्या
दिकंवप्रीगादया०ऽस्तु अनीस्तुरे वलिविधिनापालुवीनडुवंद्या
॥ लाद्धसिद्धयसवैःअ लिपितिगवलिदूगीरद्रुरमक्षअंकिकामः
स्स्वस्हं३ रु०ट्ट स्वाहा॥ वाक॥ ॐ नमोनानसिंगयञ्जाकाडदिगवं

षट् क्रूं फट् स्वाहा ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वीतराग्राय पल्लनागमा हि
नगरक्रूं फट् स्वाहा ॥ ॥ वाक्कनंतह ॥ धूप ॥ दीप ॥ नैवेद्य ॥ जाप
॥ क्षीत्रा ॥ ॥ ॐ णमो भगवते श्रीनेमिनाथाय सर्वांगदुष्टहराय देवप्रकाशन श्रीकाट
क्रिवणिदयाः पूजन्तु नायमाहा पार्श्वनाथ श्री ३ प ऊपणिरदहनक
माहा ह्मन भगवती कर्मवल्पार्श्व नाणिभिरथ ॥ ॥ ॥ ॥
ॐ णमो भगवत्री नेलवाहादून माहत्र कान. जांकिविणिदव्या त्री ३ प
ऊपणि रदहन त्यमहा ह्मान भगवते कर्म वल्पा यद्वकीमा नी जाग
लि

यन ॥ ॐ अविसतवबाक्कनसह ॥ ॥ ॥ ॥ ।
ॐ नमो ऋषपालायनमः ॥ पियायतुर्दृश्यौंनिलिगलछुवालिवि
विविक्षिरिय ॥ वातिहवालिजानपा ॥ नितिकवानपा ॥ अविर्ष
॥ पवाभनस्ता । वन ॥ तिदून ॥ वोमिसअर्दियद्रुवाया । हवि
कडुवनका ॥ पंयपना ॥ र्देशलना । गजमका । वनामाधि ॥
स्यानरवेला ॥ गाभूगावाप ॥ जिनसीनापम ॥ अघादि ॥ स्पी
प । भूरनमस्कोन ॥ पाह ॥ बनिसि ॥ मूलपापास ॥

रुकानान्याम॥ जलपात्रपूजा॥ अर्घपात्रपूजा॥ दीपस्थापि॥ मकायु
पूजा॥ मालिनिपठे॥ पयेवलिदद्यात॥ श्रीहिवलो आवाह
न॥ त्रियाग्नि॥ त्रिदव॥ मूर्ध्या॥ नर्पन॥ ॐ अथवलिंगृह्णकुरु
स्वाहा॥ ॐ गणेशायवलिंगृह्णकुरुस्वा॥ मूलमापस्वाहा॥ ॐ भैरव
स्यायवलिंगृह्णकुरुस्वाहा॥ वीवटुकनाथवलिंगृह्णकुरुस्वाहा॥ क्षे
त्रपालायवलिंगृह्णकुरुस्वाहा॥ ह्रीं कीसानायवलिंगृह्णकुरु
स्वाहा॥ ॐ प्रव्कलवलिंगृह्णकुरुस्वाहा॥ अःपिपूर्वकाली

ट क्रं २ स्वाहा ॥ अथ हनुकादि ॥ ॐ क्रौं हनुकूरपालाय वली
ट क्रं २ स्वाहा ॥ ॐ क्रीं त्रिपुनाक १३ ॥ ॐ क्रीं अग्निजिह्वाप
॥ ॐ अग्निपपाल १३ ॥ ॐ क्रों कालाग्र १३ ॥ ॐ क्रीं नक
पाल १३ ॥ ॐ क्रों रिमरूप १३ ॥ ॐ क्रों नक १३ ॥ ॐ क्रीं अपुल
१२ ॥ ॐ क्रीं अग्निगर्भ भैरोपावलि ट क्रं २ स्वाहा ॥ ॐ क्रौं पू
रे ११ ॥ ॐ क्रौं वरे ११ ॥ ॐ क्रौं आरे ११ ॥ ॐ क्रौं किवनरे ११ ॥ ॐ क्रौं
कपाल रे ११ ॥ ॐ क्रौं तपानरे नवाय वलि ट क्रं ट क्रं स्वाहा ॥
२ ॐ क्रौं अगरे नवाय वलि ट क्रं २ स्वाहा

हृपानन्यास ॥ जलपात्रपूजा ॥ अर्घपात्रपूजा ॥ स्नानहृपिआकपूः
॥ नालिक्षिप८० र ॥ पंक्तिवलिंदगानृ ॥ श्रीसंबली ॥ जावक ॥ त्रिपी
ग्निप्रियदवपूजा ॥ मूलमंत्र ॥ नर्वत ॥ ॐ ब्रादि १० ॥ ॐ ह्रूंत्रायवलिं
गृह्ण २ स्वाहा ॥ ईं जलग्रयवलिं ई ॥ ईं गमायवलिं ई ॥ ईं नैऋत्या
यवलिं ई ॥ ईं वरुणायवलिं ई ॥ ईं कुबेरायवलिं ई ॥ ईं ईशाना
यवलिं ई ॥ ॐ ब्रह्मणेवलिं ई ॥ ॐ विष्णवेवलिं ई ॥ ॐ भैरू
कादि ॥ ॐ क्रीं हूं क्षेत्रपालायवलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ क्रीं त्रिपूः

नाककं ।१३॥ ॐ क्रौं प्रिमिजिव्हा ।१२ ॥ ॐ क्रौं अग्निवनाय ।१२॥ ॐ क्रौं
कालाक्षपालाय वलिं गृह्ण स्वाहा॥ ॐ क्रौं ७ कपाल ।१३॥ ॐ क्रौं सिमनूप ॥१॥
ॐ क्रौं खनक ।१३॥ ॐ क्रौं भूवल ।१३॥ ॐ क्रौं भूलनागेरैनवायवलिं गृ
ह्ण स्वाहा॥ ॐ क्रौं रुद्र रै ॥१॥ ॐ क्रौं चन्द्र रै ॥१॥ ॐ क्रौं क्रोधरै ॥१॥
ॐ क्रौं उन्मत्त रै ॥१॥ ॐ क्रौं कपालिन रै ॥१॥ ॐ क्रौं भिषन रै ॥१॥ ॐ
हैतगतै ॥१॥ ॥ नागप्रयाणादि॥ ॐ क्रौं प्रयागक्षेत्रपालाय वलिं गृ
ह्ण स्वाहा॥ ॐ क्रौं वहन क्षेत्रपालाय वलिं गृह्ण स्वाहा॥ ॐ क्रौं कालापूनग॥

ॐ क्रौं अट्टहास ८ ॥ ॐ क्रौं गयक्षिपूत ८ ॥ ॐ क्रौं वमित्र ८ ॥ ॐ क्रौं एको
क ८ ॥ ॐ क्रौं देविकाह ८ ॥ अथ वटु मा‍ंपाद्य ॥ अट्टकनि वलिं गृह्ण २ स्वा
हा ॥ क माहं वीरे ८ ॥ ए कोपाल ८ ॥ ह वेत्रवि ८ ॥ ए वनाहि ८ ॥ यं हूं त्री
लि ८ ॥ ए अमूक्ष ८ ॥ एं मागल क्षी वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ अ डाकिनि ॥
ॐ क्रौं डाकिनि ए वलिं गृह्ण २ ॥ ॐ क्रौं रांकिनि ८ ॥ ॐ क्रौं काकिनि ८ ॥
ॐ क्रौं लाकिनि ८ ॥ ॐ क्रौं हाकिनि ८ ॥ वलि ॥ कमलादि पर्यादि नः
नवपिय अट्टक मा हक्ष नन वलि ॥ व क्षेत्रपति वलि ॥ गणपति वलि ॥
पवति वलि ॥ कथापिय ॥ नार्टेश्वर ॥ व कलादवि ॥ सिद्दव ॥ जावनी

गलीदि मालदवि ॥ नूछनाप ॥ नीदव ॥ ऽअकनवूसापल ॥ महादः
वल ॥ मदनऽअपाला ॥ कालिलिग ॥ विद्वदऽअल ॥ लोह स्वाप ॥ दव
कलीक ॥ पलिलाला ॥ प्रिल्लल ॥ जिमनेऽअजदवला ॥ पोऽअलाद
वल ॥ मातृका ॥ दूमाराऽऽदिनदूनयाप्रियाजलिमालकांपनं ॥
पऽव रमकुनवलि ॥ जग्रपूजा ॥ ग्रंगऽआकदलकिपमलामनाय
नमः ॥ ॐग्रस्वलानायनम ॥ ॐग श्रीं ह्रूं ग्लूं जग्रपालायपादूकी
प्रिया ॥ वाउं ॥ वलि ॥ ॥ पंकि पाना ग्लूं नाय ॥ मम दिगः

तं ॥ उगनत सर्वगन अर्द्धचंद्र अय ॥ गग नकासान न ॥ पूजाया

पः ॥ ॐ गं जर्मौं नंमनम मायीपादूकां ॥ पूर्वपत्रेस ॥ दक्षि

नक ॥ ॐ ग ल्मौं नक मनायाई ॥ पश्चिमेल्सान्ध ॥ ॐ ग ग्रौं

क्षि न म मा यीई ॥ उक्त ॥ ॐ ग ल्मौं क्षन्ध मनायाई ॥ ऋ

ॐ गम्मौं वीनमनायांइ ॥ ऊरस्तनन सामीप ॥ बलि ॥ निधि

ल [illegible] कायां ॥ बलिप्रधान ॥ ॐ ग [illegible]

मानमः [illegible] ॥ [illegible]

स हृकोिक कावके ठलापदोकदंहकाळ्यां ग्रनावतस्वअद्या
स्यागवधीन्वगथपनी ॥ जनकोर्यवाङउवफमलाञ्चे वनानउ
ना ॥ महदाञ्चेवपञ्चानः गनाजश्चहधानकी ॥ छनागपङ
गि.वीहिं.जकीयगजवनपवनी ॥ नकैंपानेकअधानः.ञानूद
नदनूक८ दद्रकञ्जैलगनाकः.लिछि लछविनगथु ॥ दकुंध
नदञ्जैपः.नागेकञ्जै८ प्रपनानू ॥ कृलानोवोनसिंहउ्यः हकृ
लकोमधानहन८ ॥ दगाकानौनवळुवः.लमाधोवसनेस्थ

॥ कनुख़ुः ब जलासय:हु नामसहूं कुक कथ ॥ क्रयाँ क क कसु पवाल

न क्र पालऽ दाह्हुना ॥ पवाल ह्रहु ह्हुल नै: त्तानख: अ पाल का

॥ जरवाव ज्यौ विन्ह मुः अ पाल व नु इ स८ ॥ ७ का लीय स्वकुका

नै:ऽमजानेय स्थाव हे ॥ मनल को वत्वेचा नैहाला मूसो व:

पु-सपा ॥ ७ के इ ज व टो व:विजा न व दना वसन: ॥ यज्ञाग

वा गुना वा सं व भ स्व ल्वे ग ना व न ॥ तं ग में रत्नि धनाधु८ ॥

प र्वेप्त मन गक्रुथा ॥ क्रिम नैन वनि८ प्राहानि धानै वनिरा

द्रुकठ॥ गलङ्गुठ गन्मभ्यङ्गों: पङ्कवा ट ष्ठ का ष्ठ कठ॥ अजुले

लवनै विद्याद्गुग्गनैमध्रुकत्मिः पतुध्वञ्छि मानवी ष्यो: पाले

यित्यांछिगजगग॥ गत्रुङ्गत्र मलकालि: वलिपुजांमिध

दयग॥ दत्तागकेत्रत्पाल: द्विजाद्या टक्रंग वलि॥ हुक

गक्तुपजोवु: त्योवा न वलि कीक्रुलठ॥ नित्याधि कानीव

त्योनः क्रुवायधः ङ्गगनेजगने॥ वर्वनापिर्न कैमंध्यपिगरूपि

गलोंपनः॥ द ख्लाकनालमस्मुत्रमकपालोरवनोक्रुला

॥ आश्लीनयंदनीरवरुं भ्रेनालिनिमीनफलंतुपं०॥ पूष्प
वकिफकधउनुगीवद्भवकुगुलगुले:॥ गोपेगानस्हिनाद्
लक्रमेधजापनायनं:॥ पञ्चवधुव्धगिगाधु:कपिपाका
नदाहदा॥ धकनानलधवा,विषिवद्दालिदनग:॥ नदूरि
ळनवहळ:नापलन्नादिकैलयं.निर्यप्रहृदिगनाजाहर्षे
मवल्लगेरवग्॥ श्रीपसीगानूलरनेकामा.हिअनधलदाऊ
प॥ ॐऊँक्रींहूँनमूकाय.नवनमरऊगपालायमोगवा

ल कपिल प ल. तुन ग हल न. त्रि न त्र ह्ला ला मूल ख ग न्धी भूषी व
लि पूजा ग ह्रु २ सै न व दू पै न गु बु २ ह्नु तु २ ख रे ल र ॐ ॐ ह ४
म ग ज म गा वि प ग य खो ता ॥ ॥ षा कु म ल व लि न धु न क
॥ आ ग क ॥ वृ भ्रा ॥ धूप ॥ दिप ॥ नैवेद्य छाय ॥ गा:
प ॥ गक ॥ अं ख इ ॥ श्री तं प ल ॥ ल क्रि तु प्र ॥ सं का न
ह्रि ॥ न ग मा या आ दि नी ॥ दि वा क न नि स्य ते दु स्वैव ती ॥ नि
व ति नि भि का ल स पादि ॥ प प्र ध न ॥ ग क नह ह ॥ ग ज मा

नल्पवर्षयन्थनानिलि गलन्नुपिता यनुद्दति मनागपार्श्वनरु भूगा
निमि त्यार्थन ॥ उनाक्रुगि ॥ व्रिनग्र गा ॥ त्रकानैक ॥ दूपिगु
गा ॥ पैयभनाविलर्ज नयाजव हूलाक्रुलवप्राप ॥ पहूपेगनै
॥ पहूनर्पन ॥ दैयभनागयक ॥ प नजावपैयभनागकदूपक
॥ वलिविलर्जन ॥ ताक्रियप ॥ वोग नपानर्कैवलिक्राप ॥
क्रुगिपिलावनुद्दलिनिमि गलनुवालविपि ॥ ०२ ॥ ॥

श्रीगुरुनाथं पावगतिनानपवाङ्क ॥ जगमानस्यगरूठ
नानायवरस्वनकस्यमललस्रननसनपातादिकृभ्रङ्कुद
वकर्म्मवलार्थ्ननछज्ञानिमिर्थंन ॥ ॥जगमात्ववेष्वंधंष्यनदी
गरूठनानायनरस्वनकस्यमललनसनपातादिकृभ्रः
छुदनवमीगुगसिद्धंर्षंवंष्ठांदवानकोनानिज्ञामर्धंनपूज्ञाः
निमिस्वंर्थं ॥ ॥जगमानस्यकामिवल्भरुश्रीनलनालद्रुनोनी
दांकिवलिदंपापस्त्रीगरूठनानायवनकललमलस्रानेलष्ठं

मादि ओमित्यामत स्नेनवाय पूजा मिमिरथ पूष्णगजनमन
प्रयामि नम ॥ अथ हिमवानट्ट पक्ति स्यामुलमूदि १८ ला
ग २ सं पूर्णपाजनादि नइत्योलिखि पकर्मा वाप हष्ठू मानः
किंनंवाभाइला गलक्षुवलि हृक्षु कलष [illegible] सर्व कालो ॥ ५
अथ वाव सूवावालोवका दोतना [illegible] तरीहयानू ॥ ॥

ॐ नमिरुत्वार्न्यि ॥ श्री रेनवाय नमः ॥ अथ तर्द्र म नैला न न दूर्जीव
लि विधिह्निरवि ग ॥ अत्र हमीनपनलु, लहू नामवमवर ॥ गहि
ही सावलो दवाठी वास्यासाषित्रुक्रम ॥ दूसरों नाद्वि मि: क्रम्य
गहि सा नैवतुह्विधी ॥ पतुपरथवाककानै, यत्रागठन्हि वालिवा
॥ ५ साखतः वगैं पातिदुर्नि: साहकैंष्टिग ॥ निलि (थवादषामि
वास्वकिसार्वनतैलपिऽमलो नाहि हूसवागठ, मोनी सत्यात

भाहि न ॥ अथवाविपिनं थाअं निदिँ गिरनन हं फूली ॥ जिरसद्धग
वफहन्मे:तुक्क काली नहिलनी ॥ फगाअ लिहूजनहलवअहू
श्रमहि नवयगा ॥ नकल लामाष्ट नहि लव दसा वाग्रा नाबीनी
टसंयवतुष (वेबमा रलका पी १० बअमाने ब. लिवायत्रक
क्लि नंरगला, लूला लूटपनी अधौवलिवधान ॥ नझ्मा फ:
ध ॥ ॥ लानाग्रिंत मोहें लाप ॥ पूनें नतु भकोली तंकःयव

यन्तु॥ ॥मन्त्र॥ ॐ क्रों कालीमहानाद. ह्रौं ह्रिं छिंयकं कालि
लि॥ ॐ उत्रादहिमदवीप्रवत्यामिजिववलि॥ ॐ ऐ नलूँ
नादाय॥ ॥अथतिकथवाहनं॥ मन्त्र॥ ॐ ध्यां लिलिं हूं क्रें
कजे.मालवत्रिनप्रजक्रिन.॥ मन्त्र॥ ॐ श्रीं ज्रां क्रूं क्रीं श्रीं थ्रुं
ज्रां क्रां ह्रीं क्रैं क्रूं क्रूं स्वां स्वां स्वां घानन्नादकाली
कापालिमहाकाया लिरगवनागु

फ्कालीबक्षुप।गल्वनीबक्षुकापालिनिजिवानूषिनिमि
नापानमनिलिआगकुरनिषहूरताणिर्वेकत्वघरणीनजुर
त्रीषुंआनवपरफ्नूनमछ्राहा ॥ दक्षुपानिनागलीरहिउ
॥ मक्षुपार्धवलिमूलहूनग ॥ मक्षु ॥ कारमूदिनधग ॥ दुक्षुवरु
त्रलमनापिवज्ञकपालिनीषिपा ॥ दूननोगथ्रकूरवेनर्भय
षमूमूकुकूहूंआगगा स्यालिनतापिनगकूर्यमनापिय ॥
ॐ इति ब्रह्ममंगलावलिप्रदानेविधि ॥

गुनमालनेकनिनागवनी॥ नगावुलिप्रथानै॥ गंगभगवल्भ
पहूकूभु.ठूजलभुगकुरवेगदा॥ ठूतूमूर्लिलपुलाय.कुमा
सुओनिपूमर्दनी.जमहकोठफकायलुठलापादकेदछुको॥ ग
नोवनछडवावाडोबाविलुनथपनो॥ जनककोटूयवाहूमु
कमलावकानना॥ जभूठुर्जवप.कोगनगनलगुधनै
क॥ छनानापजतीवहि.रुकीनोव्यरागलनै॥ नकैपानिकुप

यान्य, ह्मान व र्द्ध न्य दा न्कर्द द्दू क ल्ल्ओन्ल गज्ञा कु, ह्ल ठि ता ह्मवि

त्र न थ ॥ द कु ना य न ल्वे व ना ग क ल्कु प्र प ल्ल्ड्ब न ॥ रु ल्ला ने दी

सि ह ल्व ल्ट कू लि ञा न पा ल्ल्त ः पू ग ल्ला ना न व ल्ल्है व ल म्या व स

न्त ह्ल थ ॥ कू क रु ः व ग ला त्य ह्नि ना ता ह्नि ह्न क ल्ल्रु थ ॥ कुयो

न्क क म्पु प्प ती ज श्ल न, ऊ र्प पा ल ऊ व ल्ह न ॥ पीयाल ध ञ्जु छ्र व नं, ह्मा

न ह्मा ः ऊ र्प पा ल का, ल्वे बा व ञि पि हि न कु ऊ र्प पा ल य ल्लु द्दि

ठे नमालर्कसिंगवनों ॥ ५ नमाबुलिप्रधानें ॥ गंग अगनल्से
प हूकूञ्ञ.ष्टू जिञ्जु गक्त‹थ्धेण्या ॥ ष्टुत्रमूर्लिञ्जपुञालय.कूमा
ञ्जोतिहूमदृनी: जमृकोठफकायलुठलोपादोकेदक्षकों ॥ ग
नोवनाञ्ञडेदाबाडोबाधि ज्ञनथपनों ॥ अनककोंअर्यवाहूण
कमलोवक्वानना ॥ ‹मसूरवर्लीदप.क्षोगनुनाञ्ञ ञुधगे
क ॥ छनाभापजती बहि.रकीनोंल्यरानेलो ॥ नकैपानेहुण

यान्य. ह्वान व र्ह्न्य दानृक र दृ कल्ले ण ग क्षाकृ. क्ति ता ह्वावि
तन थ ॥ दकु ना य न त्वै व ना ग क क्षु प्र व ड्ड व न ॥ रु क्ला न दी
ति ह ल्व त्व कृ ति ज्ञा न या तृ न ॥ यू ग को ना ग व र्त्के व ल ष्या व स
न क्ष य ॥ न्ऋ क रु ङ्कः व ज ला त्य रु ना सा ह्रि ह्न क क्ष अ ॥ ड्या
न्ह क क्षु पं ज ब्ज न. उ त्र पा ल उ व कृ ग ॥ पं य ल ल ह ज्रु ह्नू ब न्. क्ला
न क्ला ॥ ज त्र पा त का. ल बा व ञ्ज वि हि न कु अ पा ल य दु द्व

॥१ कलिंगबकुंकाग, अभअनवरयायहैं ॥ मगलक्षीवनथा
नक्षालामूरखावसतमदा ॥२ कवउवटवाथ, विजनवनगोव
स ॥ पक्षानायगुहवास, पघलवउजनावन ॥ हंगमलतिष
नाघ, पर्गमिबहूनक्षथ ॥ निर्जनेज्ञवनि: प्राहानिधानमनि
एत्रुक ॥ नगडेगगअथज्ञा, पदू वटबुआछुक ० जिन ए
जवलीविद्या, दूघानमघकरूण ॥ पनुबूछिमहाविद्या, पाल

यित्वाह्लिगाडगन ॥ गत्रकृत्रमगकालींवलिपूजाभिर्वदयन.
॥ ववानक्षत्रवपाले. हिगाद्यागक्षनवलि ॥ हृवगक्ष नूपक्रिं
व. स्वाचानवलिकींकृत: ॥ निस्वाधिकानिवत्तान. क्रवादण्न
नजनी ॥ वर्क्षनापिनक्षणमंव., पिंगनूपिंगलोयन ॥ ढक्षुकेष
नानमस्नुग्रकपालरनगोह्वला ॥ कालीनृपन्द्र्यीवर्क्षुक्ष
नालिमिनरक्षलुषे ॥ पूषेर्क्षनथकक्तद्दीपंक्तुरयूलें ॥

लविना भरि गधेल्खक्र मपृ जापनायद्ले ॥ पल्भाग्रा धेउव्रगानाधु
लष्पिगकामननतदन ॥ मकुल्भनतघेषी,ििपि वह्लोलेनानन ॥
नहूर्लिहिंपवलुउ,नापतग्जोदिकैरर्पे ॥ निर्सप्रमूदिगानाजा,
सर्षपावह्ल लारवन ॥ ष्णीमिगानृलपगकामा,संभ्रभयपदा:
गयनृ ॥ ॐ गऊैक्रौं ह्रैं पमूकाय,ेंवगनरकुग्रपाल,मलनकलि
कपिलपपगयग नहूत,त्रिभत्राकाला मूषगभ्र्पूर्षवलितृ क्रौंक

ड्ररहैनव नूपेल हहूरखुरलऱ्ऊँ ॐ ह० मह गजामनापिपनथ
स्याल ॥ वा कुनह ॥ पोख्ठ नया ॥ ह्र ॥ ऊँजक्रौंग्री क्ष्मा मदु पी ग
पपीअनि, छन्नी पवानमवय ॥ अत्रापर्के त्रसँ दाहा, हष्ट्पिह
गलैं छिना ॥ याग्नि या गविनञ्जा, सर्वधत्र समागम: ॥ ॐ दीपे
व्यमहायक्रं, श्रीनाथेवनदोमम: ॥ यह स्था ता सने दवी, उ
तू पादवृष्निनता ॥ सर्वसिद्धि प्रदानाम, दायमबीरायसद

॥ पि गानींयाग्निनार्कः यद्विष्यक्तिमहिनलीं॥ गनाद्राक्नवर्लिदवी, हम
याःअलमलकैं॥ ८२ गिस्र गिम्नन: पूहिः मींसमदाछिडिविनीं॥ निस
नंयकुक्तानींयाग्नि गनतींकूलीं॥ कृहू कानिकूलपृानि, दूविमि ला
कूलांषिनीं॥ ॐ कानादिवयपीअ, उपलामाप्रकि लीना॥ अषाविप
पूर्सीनाहा, पिजमहुय॥ महिपानालप्रक्ताॐ: लर्घछानाकनेबूवा॥
पग्नियागइक्ाल्मा: लमगिघक्तिलापका॥ वीनकम्हिहूविनद्रा, ल
वलिघकिदवना॥ लिवाअपूउकायार्यो, लापकाक्तिलिभयिना॥ नग

नवाथअमवाः अतषावातलिटग॥ वापिकूपवस्तूदृकवाःल्मठमनमार्ग
मकुटो॥ नानातूपधनार्यवपनगाविधिअनिध॥ नपिसीतुष्टाःवलि
गठकुकुतर्वग॥ तननानगाहितर्षवा.तधमनरुलधुदि॥ वुयनैग
मयारव्यानःकनिष्ठामिवयरुहग॥ वलिपूष्यप्रदानेनःतितुलोमन
विकृका॥ तर्वकमीनितिविकृ,तर्वदावप्रेताकपग॥ मिवतकि
प्रतादेनत्रीकृकूकानमनास्यहि॥ वाकुनतह॥ ८॥ गेयावविजपार्ग
लेवःगयक्रिवापनाजिन॥ नदारजानथतीनाःकलालेवाधू

कलथ ॥ दियया न्निमहायाग्निगल्हजी ॥ लाकिनिकालनाप्रिषधु
र्धकलिनि ॥ गाझिनाथाधुनाकुमाप्रतवाचउलालिकां ॥ तीषनाधम
लानन्दा:आलामुक्तिगत्थेवध ॥ पिलआदिहक्तिनी ल्लेव: य कनीधुर्भ
टीकथ ॥ विवरजालवितिद्धि: तुद्दिक्षूआनत्थेवध: ॥ द्रूकानी
लाल्हनीदीघां धूत्राजीकलप्रिया: ॥ मानगिकाकटाछिल्हनमध्य
नेपूलयालकि ॥ नाकुसियानगादज्ञ: नका जाविन्ह नूपिनी ॥ हर्पी
कीनानाद्रलक्रि: ज्ञकांगीनहाजीनी: ॥ विनहद्रुमनकाली: कभीली

पिङ्गानना ॥ अथिनीलीग्रावगापूर्वमरुपानना ॥ अक्षिमर्वकुवी
मौत्री:यर्षिका [illegible] नीगय ॥ नगाहीन नग्निहिङ् लिपदूनिषषष्ठिका
॥ [illegible] ददयायग्नयाग्नि वलिगल्फ्राक्रुमसदा ॥ ओवन्दुः षष्ठियाग्नि
त्यावलिंगल्फ्र२ तर्ष अक्लिकृवू२ तर्षदिप्रुभिनालाय. तर्हनागप्रअ
क्लिकृतू२ [illegible] दीदूर्पपीदूपीदिपंप्रापिसार्गल्फ्र२कू३ [illegible] ग लाहा ॥ ॥
याकनलह ॥ सि ॥ लिवारगवनीर्वद. मायारत्नागृ थवरकीकि
नीविमला [illegible] जगमजिवालकधिनी ॥ पर्दीदनाधोनमानीः किकि

नीकाकिनिगय॥ सिद्धित मी त्रयादत्यी, वलि गह्न तुम सदा॥ सर्वविद्यु
विनाशप, सर्व सगविनासनी॥ सर्वल स्त्री प्रदद वी, सर्वसीवत्रिपूनर्के
॥ त्रयादत्तै नलाप, पी मिद्दिल श्री ॐ वीं हूं फीं हुं जीं वलि गह्न २ स्वाहा
॥ वाकनततः। ठेगली वकुज काव॥ लक्ष्दद वीपयागथगिवस्यादे:
कणामया॥ नागलोकपरनत्वे, भाक्षि ह्ला नरपापर॥ ननवातिक्षने
यिद्याप्यभाया वनयपिन॥ नायशिनी मता देवी, हंसा नरपनासिनी:
ॐ यैं विद्यामतादविपी ० मामा गहं हक्षिणा॥ कत्रवलीनिदिदवा नः सर्व

सिद्धि प्रवयका॥ ॥श्रीगुरुपारदिवन्कत्रीउदनादिला लवनतफपा
गाहूहलकेग्रपी अपवी०विषमयतुष्य०मकलयाअआनें हि
अनिनक टू उडुदविडूरगट धूक्रकानावगाने॥ काटथान्दूहुगाः
यामयवधूनवनें अउियानप्रभाने॥ गालारयगागहूरवांकूलप
जिनगनं आमनूपहूनाप॥ उडन्यामरुहातपदपटहूनवलाउदंदा
प्रदल्ल॥ श्रीर्दलिपालि आगपव्लूपातिनिलयं हमाविअ पलनः
श्रीमाकावाउदंलामहूतप०गिनाजाकिनिअकिनिनी॥ २ ॥का

मीनवरुद्दुवंवेदविउमलयकेउवम्मवाहकुटुंम: श्रीनाभेयंकेउउकउअ
सिविनडकंसिद्धिउंपडिहानतं॥ २ इयविपालिआनाहिमणिगितोडिवेन
कौविदवेप्रयाणः सोनाथुमखंदवेटटूदुननणनकाळनकाम्र
कवगालुगकाकें लोवानगखपूर्वकमहुइकलिंगः वंछमहिसा
ठहिमजपठलेपानलअर्जलोयं॥ ओंगोइमारटपक्रसुणिगलोः
नियअहनपबुद्दवे: नासाग्नपूवणारयंगिनिगाहिनरहें वाहुवं
लिहनादे॥ ४ ॥वणरयरिमनादेजिवपटननणनं. एडहलेजयारेपं

त्रीपि थास्वे कक्षाप्रवलगितिगदयकहू स्व लंका ॥ वाग्वानस्यी
यितालाप्रिपठमूनिपथल्लस्फूलवमार्ग्नुप्लुछाकलस्लठमलम
लपगिगातिगूलगतुक्नुउलतूनवा ॥ ५ ॥ लक्ष्मींगमूललछानप्रकलि
पूवलयतिह कलुलतलजगकप्रिजमतिपमनखहूनववतलयन
गछलायछिलक्लू ॥ योगिनामकुलावविविधवूधवृगंमाप्र
कासमर्थनक्षा८लिवा८हृविवा८वियिधवूखनूगीदिपसिद्धि
ददकु ॥ ६ ॥ वक्त्यामकुतिद्रिस्वायि ॥ ७ ॥ दृष्टव्वोवाग्निमालि

ग्रहगलगनं विधूयागं ळंवान्नागद्वागैजलाधविद्रुटयतुर
यंथ्यायिगंधवर्म्ममूर्द्ध ॥ ओंक्लंऊँ कानयक्कि हहहहहसिंग व्यई
यक्किपिवंक्कि टयकीमक्रु मानाकिलिकिलिनक्किलिःकाल
राक्षसिनीक्कि ॥ ८ ॥ याज्ञुष्याकामतृपागनतपट लहहह्रुंग
ननाद;ऽरिक्षुनिलकत्म्अमनहेदयाविदूसूद्धिप्रस
क्ला ॥ ऊँऊँऊँ लायक्कि तूतूतू पिनवल्माधमाना हनाबा
जिह्वाग्रैलालयक्किललललेललनाद्रावयायाऋपिवंक्कि ॥ ६ ॥

रूद्र कामाख्ये दूर्गे श्मनग्रुननूपाविदूनादाकेलीना, लक्ष्मीके तिष्ठि
दामापनमपनगनावद्वानंगमजी॥ प्रानातुर्थी गताहिनामध्यलिंग
म्बिकारव्या, पि० क्ष्मपूनपक्तिवकयकिनकलाकोलमा॰ग्नदिनाया॥
नाम्नश्रीकृद्विकारव्यात्रिपथगानिसनाआजनात्रिप्रकाना, नीदंवीनोमि
रक्ष्माप्रकोगिननितयापंश्याधकहिवा॥ १३ ॥ कालिकेपालहूपाके
लिननवलपरसीषनिरजुर्यंकि लामनीकृद्विकाम्बप्रकयतुमगेल्ह
नादिवोपमापा॥ १४ ॥ जौंल्लुंजौंल्लुंजौंल्लुंजौंल्लुंजौंल्लुंजौंल्लुं क्रौं क्रूं श्री

ॐ श्री नै प्रहिं दहि सिद्धि दही स्तनं दहि. भा एद्ध हि. धनं दहि धनं दहि
लक्ष्मि दहि ॐ मी वलि गफ्रु रत्र्य न्ता वधा स्वाहा ॥ ॥ त्रै बोंधि द्या महावि
या. त्रिभूलीक षू दृह्व रा ॥ वत्याभिष हृ्वा वि द्यात मू का नाप्र सजय ॥
दनधनालग ञा ज्व पुष्क नाउ क्रा नाञ्रस ॥ दिद्याम नष्ठ मापन त्नाव
पकि दं कुआ दिह ॥ अनं कन्त्रि ग्रुपात्व विक्व तूपा त्न्व व धिना ॥ सनम
नालयद्ध वी: तसप्त सनवा न्वभ ॥ सा एवा मे पलि नाम. दिद्यान्न
का प नाजिना ॥ क्रीर्हि नात्मननाद्ध वी. सनना त वि र्वा सू. पनी ॥ नव पाथ